जीव ही भगवान हैं। (अद्वैत सिद्धांत)
जीव और भगवान भिन्न हैं। (द्वैत सिद्धांत)

भगवान और जीव में कुछ महत्वपूर्ण एकसमान विशेषताएं हैं।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 94232 09132

भगवान बिना के जन्म है और वैसे ही जीव है।
भगवान अनादि है वैसे ही जीव भी अनादि है।
भगवान को नष्ट नहीं किया जा सकता वैसे ही जीव को भी नष्ट नहीं किया जा सकता।
भगवान चैतन्य है, वैसे ही जीव भी चैतन्य है।
भगवत्प्राप्ति के बाद जीव को भगवान वाला अनंत आनंद, अनंत ज्ञान, अनंत जीवन मिल जाता है जिसके कारण जीव भगवत्स्वरूप हो जाता है। इसलिए जीव ही भगवान हैं ऐसा कहा जाता है।

अब जीव और भगवान में अंतर देखिए।
भगवान के जन्म दिव्य होते है, उनको अवतार कहते है। भगवान प्रकट होते है। माँ के पेट में नही जाते है। माँ के पेट में वायु भरकर उसे वैसे ही अनुभव करा देते है, जैसे पेट में बच्चा आने पर संसारी माँ को होती है। आपको पता होगा, वसुदेव देवकी के आगे भगवान पहले शंख, चक्र, गदा, पद्म लेकर प्रकट हुए थे। इतने बडे भगवान क्या देवकी के पेट में रह सकते है? भगवान अपनी इच्छा से इस संसार में आते है और अपनी इच्छा से जाते है। भगवान के कर्म दिव्य होते है। उनको कर्म बंधन नही होता इसलिए उनका कोई प्रारब्ध भी नही होता। उनको कुछ भी पाना शेष नही है। भगवान अपने आप में परिपूर्ण है, इसलिए वे आत्माराम है। सदा आनंदमय रहते है और बाहर से संसारी व्यवहार की एक्टिंग करते

है। उनको किसी से कुछ नही चाहिए। उनके सब कर्म जीव पर कृपा करने के लिए होते है। वे अकारण करूण है। इसलिए बार बार जीवों के कल्याण के लिए अवतार लेकर इस पृथ्वी पर आते है।

जीव के जन्म का मतलब है कि जीव को नये मायिक शरीर में जबरदस्ती डालना। जीव के जन्म प्राकृत होते है। माँ के गर्भ में उल्टा टंगना पडता है। जीव के मृत्यु के समय जीव का शरीर जबरदस्ती छुडवाया जाता है। जन्म तथा मरण के समय जीव को अपार दुःख मिलता है। जिंदगी में मानसिक और शारीरिक दुःख मिलते रहते है। जीव को अपने कर्मों का फल मिलता है जिसे प्रारब्ध के रूप में भोगना पडता है। जीव अनादि काल से सुख की तलाश में है। अपने सुख के लिए ही सब कर्म करता है।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 94232 09132

भगवान मायाधीश है जबकि जीव मायाधीन है। भगवान सबकुछ जानता है, जीव भगवान के अनंत ज्ञान की तुलना में लगभग कुछ भी नहीं जानता। भगवान हर जगह मौजूद है, जीव केवल उसके शरीर में मौजूद हो सकता है। जीव नियंत्रित है जबकि भगवान नियंत्रक है। भगवान प्रकाशक है जबकि जीव उस प्रकाश से प्रकाशित है। भगवान प्रेरक हैं, जबकि जीव प्रेरित है। भगवान कार्यों के परिणाम देता है, जीव को उन परिणामों को भोगना पडता है। भगवान सर्व शक्तिमान है, जबकि जीव अल्प शक्तिमान है। भगवान के इच्छा और संकल्प स्वयंसिद्ध हैं। इसका मतलब है कि उनके सोचने से ही काम हो जाते हैं, कोई भी शारीरिक क्रियाआवश्यक नहीं हैं। जबकि जीव अपनी इच्छा के अनुसार करने के लिए बहुत अधिक संघर्ष करता है और

कई बार वह सफल नहीं होता। भगवान खुशी का अवतार है, जबकि जीव खुशी के लिए संघर्ष कर रहा है। भगवान उत्तेजक है, जबकि जीव को उत्तेजित किया जाता है। भगवान सबसे बड़े से बड़ा है तथा सबसे छोटा से छोटा भी है, जबकि जीव सूक्ष्म है और भी अनेक भेद है। जैसे किसी लक्कड पथ्थर की भगवान से तुलना नही हो सकती वैसे ही जीव की भी भगवान से तुलना नही हो सकती। अतः भगवान और जीव भिन्न हैं।

इस प्रकार,

जीव ही भगवान हैं। (अद्वैत सिद्धांत)

जीव और भगवान भिन्न हैं। (द्वैत सिद्धांत)

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 94232 09132